अध्याय आठ

पाश्चात्य संगीत

पाश्चात्य संगीत में स्वर-लिपि का अत्यधिक महत्त्व है। इसी कारण पाश्चात्य संगीत में स्वर-लिपि का विकास कई भागों में हुआ। पाश्चात्य संगीत में किसी धुन अथवा गीत को स्वर-लिपि के अनुसार ही गाया अथवा बजाया जाता है। आदि काल से वर्तमान समय तक पाश्चात्य संगीत की स्वर-लिपि पद्धति को चार भागों में बाँटा गया है।

(१) सोल्फा स्वर-लिपि पद्धति (Solfa Notation System)
(२) न्यूमस स्वर-लिपि पद्धति (Neumes Notation System)
(३) चीह्व स्वर-लिपि पद्धति (Chievh Notation System)
(४) स्टाफ स्वर-लिपि पद्धति (Staff Notation System)

१—सोल्फा स्वर-लिपि पद्धति—इस पद्धति का जन्म स्वर नामों के आधार पर हुआ। (So (प)+La (ध)+Fa (म) = Solfa इन स्वरों के आधार पर सम्भवत: इसका नाम Solfa Notation System रखा गया होगा। यह ऐसी पद्धति थी जिसमें सा रे ग म आदि स्वरों का प्रयोग क्रमश: होता था। हमारी उत्तर-भारतीय संगीत पद्धति भी इसके अन्तर्गत आती है। यह स्वर-लिपि पद्धति कुछ दिनों तक पाश्चात्य देशों में प्रचलित थी परन्तु जब Staff Notation System का प्रचलन हुआ तो उसके अत्यधिक समीप होने के कारण यह स्वर-लिपि पद्धति उसी में समाप्तप्राय हो गयी।

२—न्यूमस स्वर-लिपि पद्धति—यह पद्धति सोल्फा पद्धति से भिन्न थी। इसमें स्वर नामों के स्थान पर गीत के शब्दों का प्रयोग किया जाता था। पहले एक सीधी लाइन खींच ली जाती थी। तत्पश्चात् उसके ऊपर-नीचे स्वरों के चढ़ाव-उतार के अनुसार गीत के शब्द लिख दिये जाते थे। परन्तु स्वरों के उतार-चढ़ाव दर्शाने के लिए कोई विशेष चिह्न नहीं होते थे। फलस्वरूप रचनाकार को ही अपनी की हुई रचना को पढ़ने में कठिनाई होती थी। अन्ततोगत्वा इस पद्धति से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। समय के साथ-साथ यह पद्धति भी Staff Notation System में मिल गयी।

३—चीह्व स्वर-लिपि पद्धति—१८वीं शताब्दी में फ्रान्स के चीह्व नामक गणितज्ञ ने इस पद्धति को जन्म दिया। उन्होंने इसका आविष्कार गणित के अंकों के आधार पर किया। इस पद्धति में स्वरों के लिए क्रमशः अंकों का (जैसे—१, २, ३, ४) प्रयोग किया जाता था। आधुनिक काल में भी फ्रान्स में यह पद्धति दृष्टिगोचर होती है। भारतीय संगीत की कुछ पुस्तकों में भी इस पद्धति से मिलती-जुलती स्वर-लिपि पद्धति पायी जाती है।

४—स्टाफ स्वर-लिपि पद्धति—उपर्युक्त तीनों पद्धतियों में पाश्चात्य संगीतज्ञ अपनी रचनाओं का स्वरांकन सही ढंग से नहीं कर पाते थे। फलस्वरूप इन्हीं तीनों पद्धतियों के आधार पर पाश्चात्य विद्वानों ने Staff Notation System का आविष्कार किया एवं इस नूतन पद्धति में सही स्वरांकन के लिए सभी सम्भव प्रयास किये।

इस पद्धति में प्रारम्भ में किसी एक लकीर को मध्य सप्तक का स माना एवं उस पर स के लिए एक विशेष प्रकार का

अण्डाकार (○) चिह्न बना दिया। इसके बाद उसके ऊपर की रेखा पर रे दर्शाया। पुनः अगली रेखा पर ग, इस प्रकार ऊपर की रेखाओं पर म प ध नी आदि स्वर एवं नीचे की रेखा पर नी ध़ प़ आदि स्वर क्रमशः दर्शाया गया जैसे—

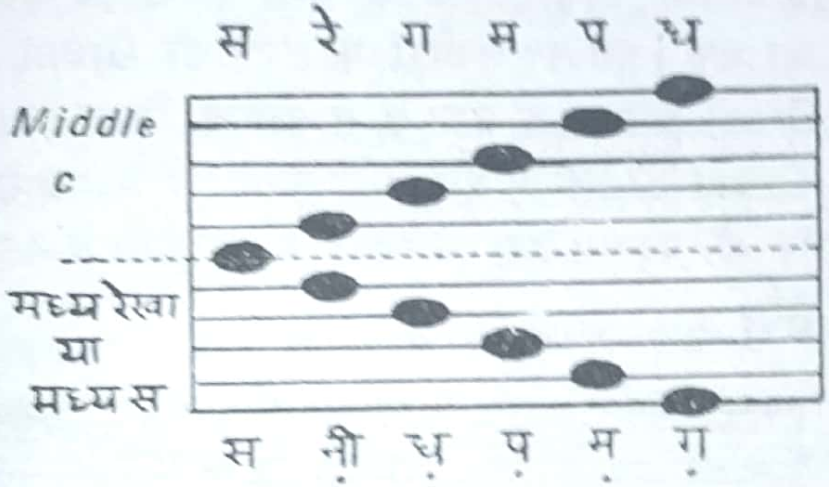

परन्तु इस प्रकार स्वरों को दर्शाने में अधिक लाइनों की आवश्यकता महसूस हुई। फलस्वरूप इसमें परिवर्तन करके एक स्वर को लाइन पर एवं दूसरे की दो लाइनों के बीच में दर्शाया गया। जैसे—

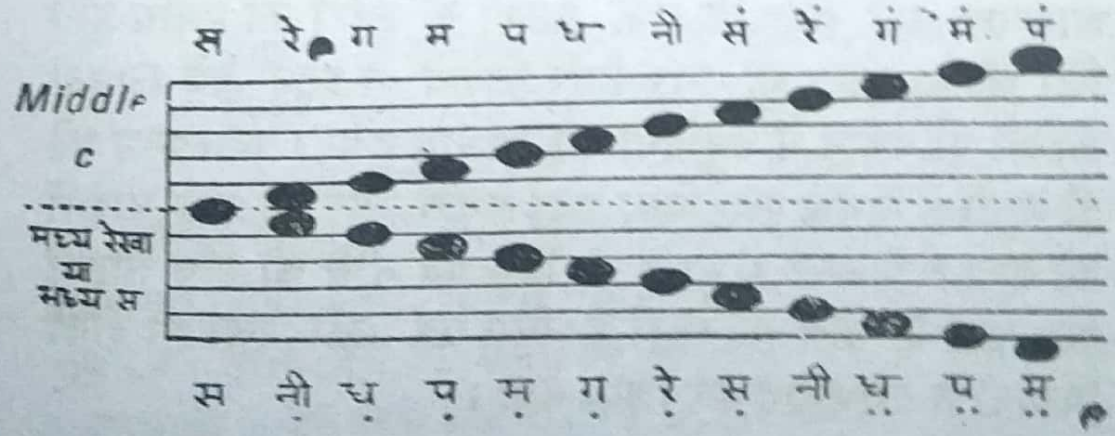

इस प्रकार थोड़ी ही लकीरों के द्वारा अधिक स्वरों को दर्शाने की सुविधा मिल सकी। परन्तु यह शुद्ध स्वरों को दर्शाने

का ढङ्ग था। विकृत स्वरों को दर्शाने के लिए Flat एवं Sharp चिह्नों का प्रयोग किया गया।

इस प्रकार पाश्चात्य संगीत में विद्वानों ने ११ लाइनों का एक समूह बनाया जिसमें सप्तक के सभी स्वरों को सरलता से दर्शाया जा सके। इस ११ लकीरों के समूह को Great Staff अथवा Great Stave के नाम से सम्बोधित किया गया। इस प्रकार Great Staff में अति मन्द्र सप्तक के मध्यम से लेकर तार संप्तक के पञ्चम तक के स्वरों को सरलता से दर्शाने की सुविधा हुई।

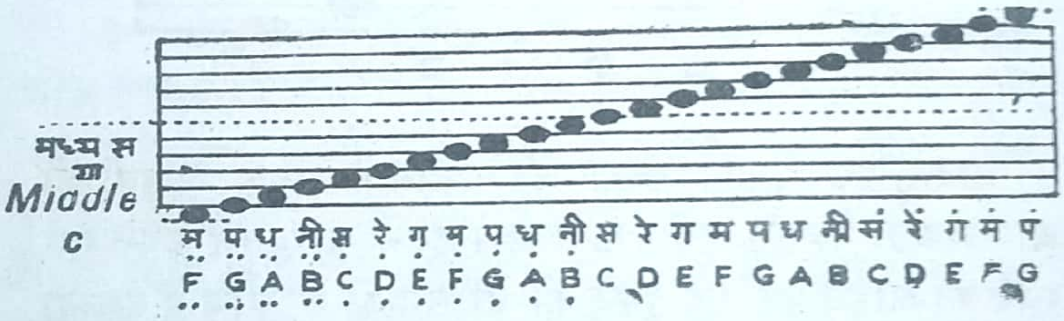

परन्तु संगीत रचना में किसी स्वर रचना के लिए यह आवश्यक नहीं होता कि सभी सप्तकों के स्वरों का प्रयोग हो। फिर छोटी रचना की स्वर-लिपि लिखने में इतने बड़े Great Staff को बनाने में असुविधा का आभास हुआ। फलस्वरूप इसे दो भागों में विभक्त कर दिया गया अर्थात् ऊपर की पाँच लाइनों को मध्य स से ऊपर के स्वरों के लिए एवं नीचे की पाँच लाइनों को मध्य से नीचे के स्वरों के लिए एवं छठी रेखा को दोनों विभागों में सम्मिलित कर लिया गया।

ऊपर की पाँच रेखाओं के ऊपर एक विशेष प्रकार का चिह्न बनाकर इसे Treble Clef एवं नीचे की रेखाओं के ऊपर एक

विशेष प्रकार का चिह्न बनाकर Bass Clef कहा गया। इस विशेष चिह्नों को इस प्रकार बनाया गया।

Treble Clef

Bass Clef

पाश्चात्य संगीत में स्वरों को निम्न नामों से सम्बोधित किया जाता है—

स	रे	ग	म	प	ध	नी
Do	Re	Me	Fa	So	La	Si
C	D	E	F	G	A	B
Tonic,	Major II, या Super Tonic,	Major III, या Mediant	Perfect IV, या Sub Dominant,	Perfect V, या Super Dominant,	Major VI, या Dominant,	Major VII, या Leading Note

पाश्चात्य संगीत में कम-से-कम स्वरों की दूरी को Semi Tone (सेमी टोन) कहते हैं जैसे स से कोमल रे या शुद्ध ग से शुद्ध म आदि एवं दो सेमीटोन मिलकर एक Tone (टोन) कहलाता है जैसे स से शुद्ध रे (स+रे॒+रे) आदि।

भारतीय संगीत की भांति पाश्चात्य संगीत में भी स्वरों की नीची एवं ऊँची अवस्थाएं होती हैं। जिनके लिए विशेष प्रकार

के चिह्न बनाये जाते हैं जिन्हें क्रमशः Flat एवं Sharp कहते हैं।

Flat (फ्लैट) (♭) Sharp (शार्प) (♯)

जब किसी स्वर को एक सेमी टोन नीचा करना होता है तो उसके बायीं तरफ (Flat) (♭) का चिह्न बना देते हैं एवं जब किसी स्वर को एक सेमी टोन ऊँचा करना होता है तो उसके बायीं तरफ Sharp (♯) का चिह्न बना देते हैं।

जब किसी स्वर को दो सेमी टोन ऊँचा करना होता है तो उसके बायीं तरफ डबल शार्प (×) का चिह्न बना देते हैं एवं किसी स्वर को दो सेमी टोन नीचा करना होता है तो उसके बायीं तरफ डबल फ्लैट (♭♭) का चिह्न बना देते हैं।

Double Sharp (×) (डबुल शार्प) Double Flat (♭♭) (डबुल फ्लैट)

पाश्चात्य संगीत में फ्लैट अथवा शार्प किये हुए स्वर को जब उसके पूर्व स्थिति में लाना होता है तो उसके बायीं तरफ नेचुरल (Natural) ♮ का चिह्न बना देते हैं।

Natural (नेचुरल) (♮)

Kay Signature—('की सिगनेचर') जब क्लैफ सिग-नेचर के तुरन्त बाद किसी लाइन पर अथवा दो लाइनों के बीच में फ्लैट, डबुल फ्लैट या शार्प, डबुल शार्प के चिह्न आते हैं एवं वे चिह्न क्लैफ में बने हुए सभी स्वरों को प्रभावित करते हैं तो प्रारम्भ में आने वाले इन्हीं चिह्नों को 'की सिगनेचर' कहते हैं। जैसे :—

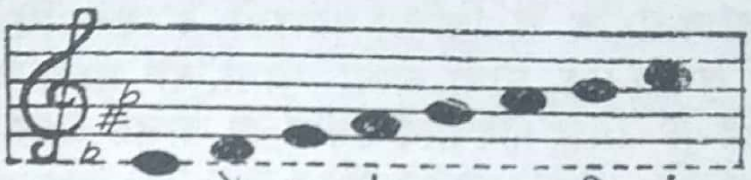

'Enharmonics' 'इनहारमोनिक्स' :—पाश्चात्य संगीत में एक ही स्वर को कई नामों से सम्बोधित किया जाता है। इनके नाम कई होते हैं पर इनकी ध्वनि एक ही होती है। पाश्चात्य संगीत में इन्हें ही एक-दूसरे के 'इनहारमोनिक्स' कहा जाता है। जैसे-प (G) स्वर को F × (एक डबुल शार्प) या A*bb*(ए-डबुल फ्लैट) कहते हैं।

Bar line बार लाइन :—जिस प्रकार हमारे भारतीय संगीत में ताल में विभाग होते हैं उसी प्रकार पाश्चात्य सङ्गीत की लय अथवा ताल को दिखाने के लिए Bar line होती है। पाश्चात्य संगीत में 'बार लाइन' द्वारा सङ्गीत रचना को बराबर विभागों में बाँट दिया जाता है :—

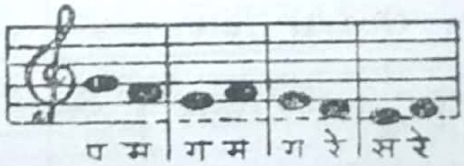

Leger Line लेजर लाइन :—जब सङ्गीत रचना के स्वर क्लैफ में आने वाले स्वरों के आगे के स्वर होते हैं, तो उन्हें दर्शाने के लिए क्लैफ के ऊपर अथवा नीचे आवश्यकतानुसार छोटी-छोटी रेखाएँ खींच लेते हैं जिन्हें Leger Line कहते हैं जैसे :—

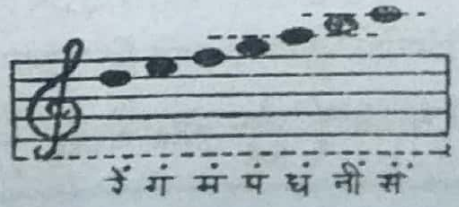

पाश्चात्य संगीत में लय और मात्रा

पाश्चात्य संगीत में विभिन्न मात्राओं के स्वर चिह्न भिन्न-भिन्न हैं। अर्थात् एक मात्रा, आधी मात्रा, दो मात्रा एवं तीन मात्रा आदि के चिह्न पाश्चात्य संगीत में अलग-अलग हैं। इस प्रकार पाश्चात्य स्वर चिह्नों को देखने से तुरन्त पता चल जाता है कि स्वर चिह्न कितने मात्रा का है। पाश्चात्य संगीत के स्वर चिह्नों का काल मान भारतीय संगीत में निम्न प्रकार से होगा, जिसे इस प्रकार दर्शाया जा सकता है—

क्रम संख्या	स्वर चिह्न	पाश्चात्य नाम	पाश्चात्य मात्रा	भारतीय मात्रा
(१)		Breave (Double Whole Note)	२	८
(२)		Semi-Breave (Whole Note)	१	४
(३)		Minim (Half Note)	$\frac{१}{२}$	२
(४)		Crotchet Quarter Note	$\frac{१}{४}$	१
(५)		Quaver Note $\left(\frac{1}{8}\text{ the Note}\right)$	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{२}$
(६)		Semi Quaver Note $\left(\frac{1}{16}\text{ the Note}\right)$	$\frac{१}{१६}$	$\frac{१}{४}$
(७)		Demi-Semi Quaver Note $\left(\frac{1}{32}\text{ the Note}\right)$	$\frac{१}{३२}$	$\frac{१}{८}$
(८)		Hemi-Demi-Semi Quaver Note $\left(\frac{1}{64}\text{ the Note}\right)$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१}{१६}$

सरल ताल चिह्न—पाश्चात्य संगीत में ताल के विभाग सदैव एक समान होते हैं, अर्थात् जितने मात्रा के जितने स्वर पहले विभाग में होंगे उतने ही मात्रा के उतने ही स्वर क्लैफ के अन्य विभाग में भी होंगे। इसे दर्शाने के लिए क्लैफ के प्रारम्भ में Clef Signature के बाद टाइम सिगनेचर (Time Signature) का प्रयोग करते हैं। इसके लिए गिनतियों का प्रयोग किया जाता है। यह प्रयोग की हुई गिनतियाँ ऊपर-नीचे लिखी जाती हैं, जिसमें ऊपर की गिनती प्रत्येक बार में दिये गये स्वरों की संख्या प्रकट करती है एवं नीचे की गिनती यह दर्शाती है कि स्वर की मात्रा क्या है, जैसे :—

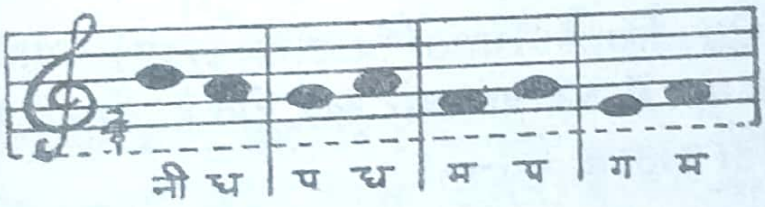

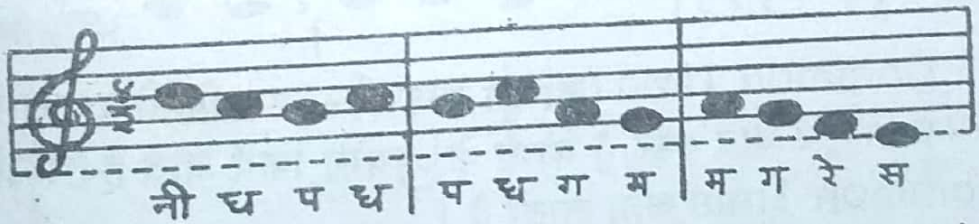

इस प्रकार पाश्चात्य संगीत में जो विभाग (Bar) Bar Line द्वारा बनते हैं उन्हें मेजर (Measure) एवं उनमें प्रयुक्त होने वाले स्वर को बीट्स (Beats) कहते हैं।

सिम्पल टाइम में प्रत्येक स्वर साधारण होता है अर्थात् इसमें प्रयोग किये जाने वाले स्वर हैं जैसे Breave, Semi Breave एवं Minim Cortchet इत्यादि इसके तीन प्रकार होते हैं।

(1) Duple Time (ड्यूपिल टाइम)—जब प्रत्येक 'बार' में दो-दो स्वर होते हैं तो उसे पाश्चात्य संगीत में ड्यूपिल टाइम कहा जाता है, जैसे—

(2) Triple Time (ट्रिपिल टाइम)—इसी प्रकार जब प्रत्येक बार में तीन-तीन स्वर होते हैं तो उसे पाश्चात्य संगीत में ट्रिपिल टाइम कहा जाता है, जैसे—

(3) Quadruple Time (क्वाड्रपिल टाइम)—संगीत रचना के प्रत्येक बार में जब चार-चार स्वर होते हैं तो उसे क्वाड्रपिल टाइम कहा जाता है, जैसे—

Common Time (कॉमन टाइम)—जब किसी रचना के प्रत्येक बार में चार स्वर $\frac{1}{4}$ मात्रा के प्रयोग किये जाते हैं तो उसे Common Time कहा जाता है।

Compound Time (कम्पाउण्ड टाइम)—पाश्चात्य संगीत में जब किसी स्वर के आगे एक बिन्दु लगा दिया जाता है तो उसका समय ड्योढ़ा हो जाता है अर्थात् जिस स्वर के आगे बिन्दु लगाया जाता है वह बिन्दु उस स्वर का आधा समय उस स्वर के साथ और दिग्दर्शित करेगा। इस प्रकार जब किसी विभाग में स्वर बिन्दु सहित होता है तो उसे कम्पाउण्ड टाइम कहते हैं। इसके भी तीन प्रकार होते हैं।

१–कम्पाउण्ड ड्यूपिल टाइम (Compound Duple Time—जब प्रत्येक 'बार' (BAR) में दो-दो स्वर बिन्दु सहित होते हैं तो उसे कम्पाउण्ड ड्यूपिल टाइम कहते हैं, जैसे—

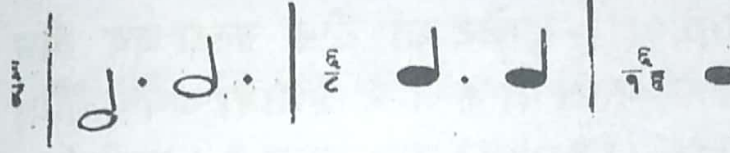

२–कम्पाउण्ड ट्रिपिल टाइम (Compound Triple Time)—जब प्रत्येक 'बार' (बार) में तीन-तीन स्वर बिन्दु सहित होते हैं तो उसे कम्पाउण्ड ट्रिपिल टाइम कहा जाता है, जैसे—

३–कम्पाउण्ड क्वाड्रपिल टाइम (Compound Quadruple Time)—जब प्रत्येक विभाग (BAR) में चार-चार स्वर बिन्दु सहित होते हैं तो उसे कम्पाउण्ड क्वाड्रपिल टाइम कहते हैं, जैसे—

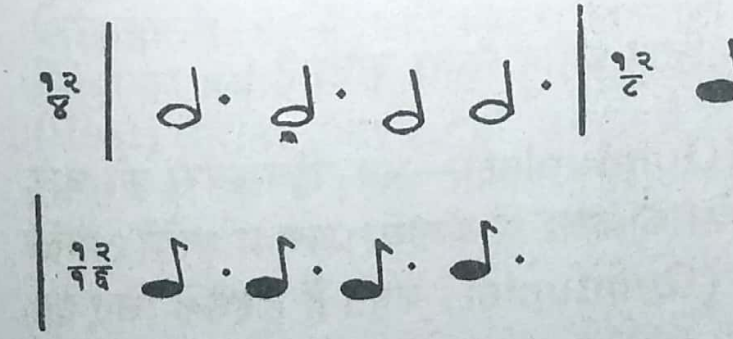

विभिन्न प्रकार की लयकारी—

१–डुपलेट (Duplet)—जब दो स्वरों की तीन स्वर के समय में गाया अथवा बजाया जाता है तो उसे (Duplet) डुपलेट कहा जाता है।

इसके लिए इस प्रकार का चिह्न प्रयोग किया जाता है।

२–ट्रिप्लेट (Triplet)—डुपलेट का ठीक उल्टा जब तीन स्वरों को दो स्वरों के मात्रा या काल में बजाया अथवा गाया जाता है तो उसे ट्रिप्लेट (Triplet) कहा जाता है। इसके लिए इस प्रकार का

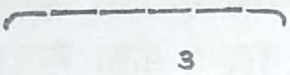

चिह्न प्रयोग किया जाता है।

३–क्वाड्रूप्लेट (Quadruplet)—पाश्चात्य संगीत में जब चार स्वरों को तीन स्वरों के समय में गाया अथवा बजाया जाता है तो उसे क्वाड्रूप्लेट (Quadruplet) कहते हैं। इसके लिए इस प्रकार का

चिह्न प्रयोग किया जाता है।

४–क्विण्टूप्लेट (Quintuplet)—जब पाँच स्वरों को चार मात्रा अथवा तीन मात्रा के काल में बजाया अथवा गाया जाता है तो उसे क्विण्टूप्लेट (Quintuplet) कहते हैं। इसके लिए इस प्रकार का

चिह्न प्रयोग किया जाता है।

५–सेक्स्टोलेट (Sextolet)—जब छह स्वरों के समय में चार स्वरों को गाया अथवा बजाया जाता है तो उसे सेक्स्टोलेट (Sextolet) कहते हैं।

६

इसके लिए इस प्रकार का

चिह्न प्रयोग किया जाता है।

६–सेप्टोलेट (Septolet)—जब सात स्वरों को चार स्वर या छह स्वर के समय में गाया अथवा बजाया जाता है तो उसे (Septolet) सेप्टोलेट कहते हैं।

७

इसके लिए इस प्रकार का

चिह्न प्रयोग किया जाता है।

'रेस्ट' (Rest) (टिकाव)

पाश्चात्य संगीत में जिस प्रकार मात्राओं के आधार पर स्वर चिह्न बनाये गये हैं उसी प्रकार विश्रान्ति (Rest) के लिए भी चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिस स्थान पर जितनी विश्रान्ति (Rest) दर्शाना होता है वहाँ पर उतने ही मात्रा का विश्रान्ति चिह्न बना देते हैं। यह विश्रान्ति (Rest) के चिह्न पाश्चात्य संगीत में कुल १० प्रकार के होते हैं जो निम्न हैं :—

	चिह्न	नाम	पाश्चात्य मात्रा	भारतीय मात्रा
१	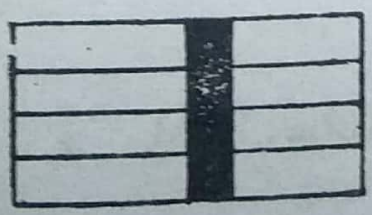	Maximum Rest or Two long Rest	८	३२

২.

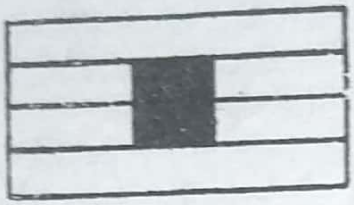

Long Rest ৪ ১৬

৩.

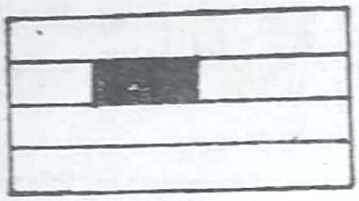

Breave Rest ২ ৮

৪.

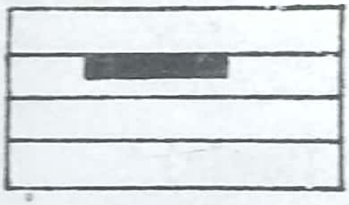

Semi Breave Rest ১ ৪

৫.

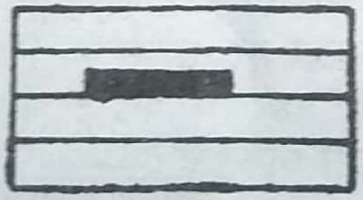

Minimum Rest $\frac{১}{২}$ ২

৬.

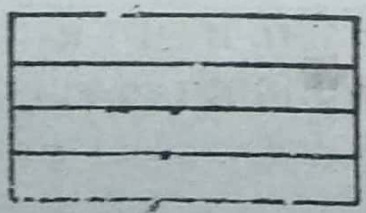

Crotchet Rest $\frac{১}{৪}$ ১

७.

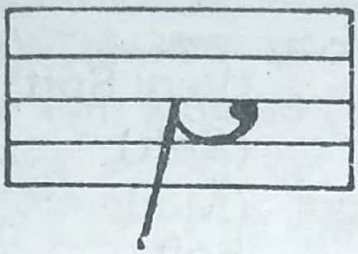

Quaver Rest $\frac{1}{८}$ $\frac{1}{२}$

८.

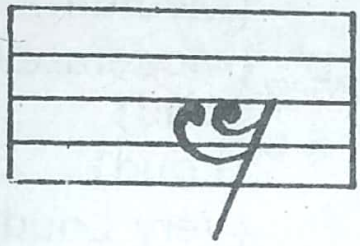

Semi Quaver Rest $\frac{1}{१६}$ $\frac{1}{४}$

९.

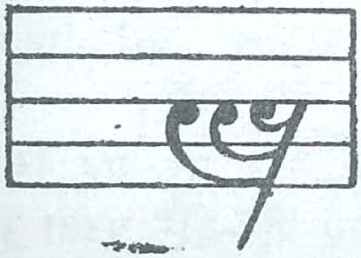

Demi Semi Quaver Rest $\frac{1}{३२}$ $\frac{1}{८}$

१०.

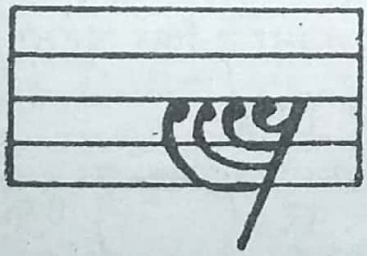

Hemi Demi Semi Quaver Rest $\frac{1}{६४}$ $\frac{1}{१६}$

विश्रान्ति चिह्नों का प्रयोग अधिकतर वाद्य सङ्गीत में होता है विशेष कर वाद्य वृन्द (आरकेस्ट्रा) में।

प्राबल्य के चिह्न

पाश्चात्य सङ्गीत में विभिन्न स्वरों के प्राबल्य दर्शन के लिए अलग-अलग चिह्नों का प्रयोग किया जाता है जो लगभग १० हैं। नाद के छोटा एवं बड़ापन के अनुसार इन चिह्नों को स्वरों के

ऊपर लगा देते हैं। आजकल भारतीय सङ्गीत में भी कुछ प्राबल्य के चिह्न प्रयोग में आने लगे हैं।

१. P P :—अधिक मुलायम (Very Soft)
२. P :—मुलायम (Soft)
३. M P :—औसत दर्जे का मुलायम (Moderately Soft)
४. M :—बीच का (Medium)
५. Mf :—औसत दर्जे का जोरदार (Moderately Loud)
६. f :—जोरदार स्वर (Loud)
७. ff :—अधिक जोरदार (Very Loud)
८ > :—Crescendo जिस स्वर पर यह चिह्न बना होता है उसका प्राबल्य धीरे-धीरे बढ़ाना होता है।
९ > :—Diminendo जिस स्वर पर यह चिह्न बना होता है उसका प्राबल्य धीरे-धीरे घटता है।
१० <> :—Swell जिस स्वर पर यह चिह्न बना होता है उसका प्राबल्य पहले बढ़ता है फिर घटता है।

स्वर सौन्दर्य के चिह्न

(१) Pause जब किसी स्वर पर (⌒) ऐसा चिह्न बना होता है तो इसे Pause कहते हैं। यह चिह्न एक प्रकार का न्यास दर्शाता है। जिस स्वर पर गायक न्यास करता है अथवा मनमानी देर तक ठहरता है उस पर ऐसा चिह्न बना देते हैं।

(२) Slur—जब दो अथवा दो से अधिक स्वरों के ऊपर इस प्रकार का (⌒) चिह्न बना रहता है तो उसे 'स्लर' कहते

हैं। भारतीय संगीत में इसे मींड कहते हैं। इसे मींड की भाँति गाया अथवा बजाया जाता है।

(३) Tie—जब इस प्रकार का (⁀) चिह्न एक ही स्वरों पर बना रहता है तब उसे (Tie) 'टाई' कहते हैं। ऐसी दशा में केवल पहले स्वर को गाते अथवा बजाते हैं एवं शेष स्वरों की मात्राओं के बराबर उसे गाते रहते हैं।

(४) Upper mordent—जिस स्वर पर इस प्रकार का (——^–) चिह्न बना रहता है उस स्वर को तथा उससे एक ऊँचे स्वर को तथा पुनः उसी स्वर को गाते हैं। जैसे—

——^—
ग (ग म ग)

(५) Lower mordent—जिस स्वर पर इस प्रकार का (—v——) चिह्न बना रहता है पहले उस स्वर को फिर उससे एक नीचे स्वर को तथा पुनः उसी स्वर को गाते हैं। जैसे—

—v——
ग (ग रे ग)

(६) Turn—जिस स्वर पर यह चिह्न (ᔓ) लगा होता है पहले उससे एक ऊँचा स्वर फिर उस स्वर को फिर उससे एक नीचा स्वर फिर उस स्वर को गाते हैं, जैसे—ग̈ (म ग रे ग)

(७) Inverted Turn—जिस स्वर पर यह (ᔕ) चिह्न होता है पहले उससे एक नीचा स्वर फिर उस स्वर को फिर उससे ऊँचा स्वर एवं पुनः उसी स्वर को गाते हैं, जैसे—

ग̈ (रे ग म ग)

(८) Trill—जिस स्वर पर Tr बना होता है उस स्वर को तथा उससे एक ऊँचे स्वर को शीघ्रता से गाते हैं। इसे भारतीय संगीत में क्रुन्तन कहते हैं, जैसे— Tr ग (गम, गम, गम,)

(९) Spred—जब क्लैफ में 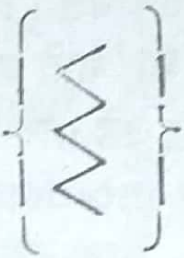 इस प्रकार का चिह्न बना होता है तो नीचे स्वरों से ऊँचे स्वरों को शीघ्रता से बजाते चले जाते हैं। इसका प्रयोग अधिकतर वाद्य संगीत में होता है।

(१०) Strong accent—जिन स्वरों पर Sp या Fz चिह्न बना होता है उन स्वरों को कुछ जोर देकर गाते हैं।

राग पूरिया धनाश्री छोटा ख्याल

(तीन ताल)

स्थायी

प – ध़ ग	मं ध़ रे़ नी	ध़ – प प	प प – प
पा ऽ यलि	या ऽ झ न	का ऽ ऽ र	ऽ मो ऽ रि
०	३	×	२

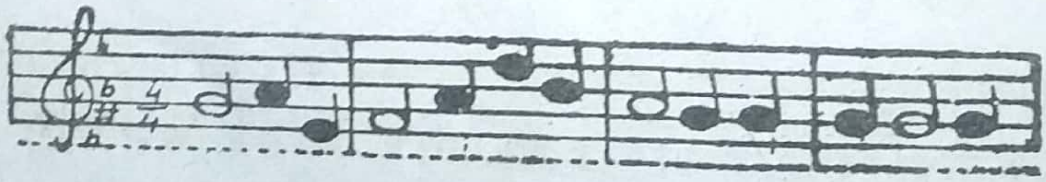

मं मंध़ मंग	मं रे़ ग –	मं रे़ ग मं	ग रे़ सा –
झ नऽन झ	न न ब ऽ	जे ऽ झ न	का ऽ रो
०	३	×	१

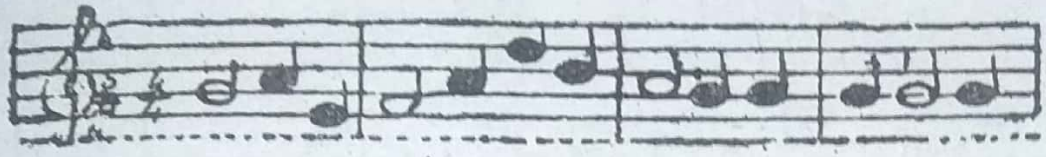

अन्तरा

मं मं ग ग	मं – ध़ –	सं सं सं सं	रें – सं –
पि य स म	झा ऽ ऊँ ऽ	स म झ त	ना ऽ हीं ऽ
०	३	×	२

नी रें गं रें	नी रें सं –	नी ध़ नी रें	नी नी ध़ ध़
सा ऽ सं न	न द यो ऽ	री ऽ दे ऽ	गि गा ऽ रि
०	३	×	२

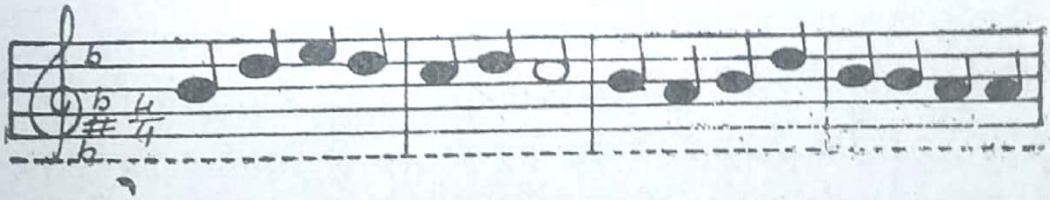

राग पूरिया धनाश्री मसीतखानी

(तीन ताल)

स्थायी

पप	मं गग मं ध़ध़ नी रें	नी ध़ प मंप	मं रेंरें ग मंप
दिर	द दिर दादिर दारा	दा दा रा दिर	दा दिर दा दारा
	३	×	२

ग	रे	स
दा	दा	रा
०		

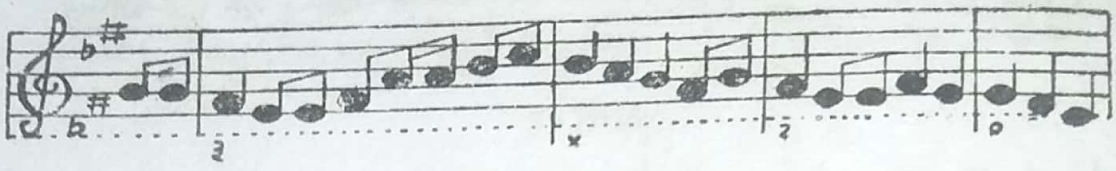

मझां

पप	म॑ गग रे॒ स	म॑ ध॒ध॒ नी॒ म॑	ग म॑म॑ प म॑	ग रे॒ स
दिर	दा दिर दा र	दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दा रा
	३	×	२	०

अन्तरा

पप	ग म॑म॑ ध॒ नी॒ रें॒	सं सं सं संसं
दिर	दा दिर दा दा रा	द दा रा दिर
	३	×
	नी॒ रें॒रें॒ गं रें॒	नी॒ ध॒ प
	दा दिर दा रा	दा दा रा
	२	०

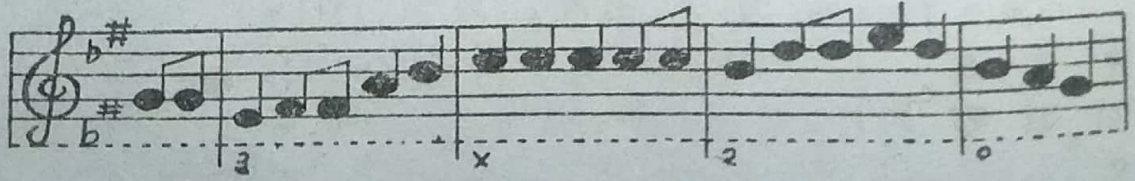

गंगं	रें	सांसां	नी	ध	मं	नीनी	ध	प
दिर	द	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
०	३				×			
	मं	रेरे	ग	मंप	ग	रे	सा	
	दा	दिर	दा	दारा	दा	दा	रा	
	२				०			

विभिन्न स्वर सप्तक (Musical Scale)

स्वर सप्तक का विकास सम्भवतः दो आधार पर हुआ होगा। एक तो जो मनुष्य समुद्र के किनारे रहते थे, उन्होंने छोटे एवं बड़े शङ्खों की ध्वनियों के आधार पर एवं जो मनुष्य जंगल में रहते थे उन्होंने छोटे-बड़े बाँसों के ध्वनियों के आधार पर सप्तक बनाई होगी। सम्भवतः प्रारम्भ में लोगों ने अनुभव किया कि दो नाद ऊँचे एवं नीचे होने पर भी एक तरह के सुनाई पड़ते हैं। ये दो नाद सम्भवतः मध्य सा एवं तार सा रहे होंगे फिर पुनः दो नाद इन दो नादों के बीच के नाद ज्ञात हुए जो इनसे मधुर सम्बन्ध रखते थे ये नाद सम्भवतः मध्यम एवं पञ्चम थे। इस प्रकार अन्य स्वरों की भी खोज हुई एवं कुल मिलाकर सात स्वरों की सप्तक की रचना हुई। वर्तमान समय में भारत तथा पाश्चात्य देशों में विभिन्न नामों से स्वर सप्तक जो कि प्रचलित हैं सम्बोधित की जाती हैं। वे संख्या में १० हैं।